

व्यापार की योजना

आय सृजन गतिविधि - अचार चटनी/अचार बनाना

द्वारा

चित्तरेखा जगत जननी-स्वयं सहायता समूह



एसएचजी/सीआईजीनाम	::	चित्तरेखा जगत जननी
वीएफडीएस नाम	::	ट्रैडा
श्रेणी	::	निचार
विभाजन	::	किन्नौर

तैयारअंडर-



हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन और विकास परियोजना
आजीविका (JICA सहायता प्राप्त)

विषयसूची

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ/पृष्ठों
1	परिचय	3
2	SHG/CIG का विवरण	3
3	लाभार्थियों का विवरण	4
4	गाँव का भौगोलिक विवरण	4
5	कच्चे माल और बाजार क्षमता का चयन	4
6	अचार/चटनी बनाने की व्यवसाय योजना	5
7	अचार/चटनी/अचार बनाने का व्यवसाय अनुपालन	6
8	विभिन्न प्रकार के अचार	7
9	स्वोट अनालिसिस	7
10	अचार बनाने के उपकरण	8
11	अचार/चटनी/अचार बनाने का कच्चा माल	8
12	उत्पादन लागत (मासिक)	9
13	लागत-लाभ विश्लेषण (मासिक)	10
14	एसएचजी में निधि प्रवाह व्यवस्था	10
15	प्रशिक्षणक्षमतानिर्माणकौशलउन्नयन	10
16	आय के अन्य स्रोत	11
17	निगरानी विधि	11
18	टिप्पणी	11
	समूह सदस्यों की तस्वीरें	

1. परिचय

हिमाचल प्रदेश भारत के उत्तरी भाग में स्थित एक राज्य है और पश्चिमी हिमालय में स्थित है। इसकी विशेषता इसकी चरम प्राकृतिक छटा है जिसमें कई चोटियाँ और विस्तृत नदी प्रणाली है। हिमाचल प्रदेश को "देवभूमि" के रूप में जाना जाता है और यह अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए भी जाना जाता है। हिमाचल प्रदेश वनस्पतियों और जीवों से समृद्ध है।

राज्य में विविध पारिस्थितिकी तंत्र, नदियाँ और घाटियाँ हैं, और इसकी जनसंख्या 75 लाख है। इसका क्षेत्रफल 55,673 वर्ग किलोमीटर है, जो शिवालिक की तलहटी से लेकर मध्य पहाड़ियों (समुद्र तल से 300 - 6816 मीटरिक टन ऊपर), ऊँची पहाड़ियों और ऊपरी हिमालय के ठंडे शुष्क क्षेत्रों तक फैला हुआ है। यह घाटियों में फैला हुआ है, जहाँ से कई बारहमासी नदियाँ बहती हैं। राज्य की लगभग 90% आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। कृषि, बागवानी, जलविद्युत और पर्यटन राज्य की अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण घटक हैं।

हिमाचल प्रदेश में 12 जिले हैं और किन्नौर राज्य के बारह प्रशासनिक जिलों में से एक है। किन्नौर जिला तीन प्रशासनिक उप-मंडलों (कल्पा, निचार, भाभा, नगर) और पूह में विभाजित है और इसकी छह तहसीलें हैं। जिले का मुख्यालय रिकांगपिओ में स्थित है। यह राज्य का दूसरा सबसे बड़ा जिला है। ललाहुल और स्पीति के बाद हिमाचल प्रदेश का सबसे कम आबादी वाला जिला किन्नौर है। 2011 की जनगणना के अनुसार, जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 6401 वर्ग किलोमीटर है और जनसंख्या 84121 है।

किन्नौर जिला, जो कभी निषिद्ध क्षेत्र था, अब साहसी और साहसी साधकों के लिए एक अनमोल खजाना माना जाता है। कल्पा से भगवान शिव का निवास किन्नर कैलाश पर्वत देखा जा सकता है। इसके अलावा, नाको गाँव में भी प्राचीन काल से ही दर्शनीय स्थल है। निचले किन्नौर में हिंदू धर्म का व्यापक प्रभाव है और उनकी मान्यताओं में बौद्ध धर्म की झलक मिलती है, जबकि ऊँचाई वाले क्षेत्रों में बौद्ध धर्म का बोलबाला है और दोनों धर्म सौहार्दपूर्वक सह-अस्तित्व में हैं। किन्नौर जिला अपने सूखे मेवों जैसे चिलगोजा, खुबानी और बादाम के लिए प्रसिद्ध है। इसके अलावा, सेब की खेती ने भी गति पकड़ ली है और अब किन्नौर जिले के सेब राज्य के अन्य हिस्सों की तुलना में सबसे अधिक मूल्य प्राप्त कर रहे हैं।

ट्रांडा गाँव पुराने एचटी रोड के ऊपर स्थित है। यह एक खूबसूरत गाँव है जो चारों ओर से सुंदर शंकुधारी वनों से घिरा हुआ है। गाँव के मध्य में माता चित्तरलेखा का एक सुंदर ऐतिहासिक मंदिर स्थित है। ट्रांडा गाँव प्राकृतिक जड़ी-बूटियों, झाड़ियों, पेड़ों और विभिन्न औषधीय पौधों से भरपूर है। इसके अलावा, स्थानीय निवासियों के पास सेब, ताड़ और जंगली खुबानी के बाग भी हैं।

ट्रांडा पंचायत वार्ड संख्या 2 में आने वाले ट्रांडा के निवासियों ने जेआईसीए परियोजना के तहत आय सृजन गतिविधि के रूप में अचार, जैम और जूस (सेब और गुलाब के फूल) की पहचान की है। स्थानीय महिलाओं ने पिछले 5 वर्षों से एनआरएलएम के तहत एसएचजी का गठन किया है और धन की कमी के कारण समूह सक्रिय अवस्था में नहीं है।

अचार, जैम और जूस देश भर में हर खाने की ज़रूरी सामग्री है और इन्हें इस क्षेत्र में त्योहारों, शादी-ब्याह आदि में भी परोसा जाता है। अचार/अचार, जैम और जूस में कई तरह की विविधता का इस्तेमाल किया जाता है, जो स्थानीय स्तर पर उपलब्ध कच्चे माल, स्वाद और लोगों की खान-पान की आदतों के आधार पर अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग होती है।

अचार, जैम और जूस बनाने के व्यवसाय का सबसे आकर्षक पहलू यह है कि इसे समूह की वित्तीय क्षमता के अनुसार शुरू किया जा सकता है और बाद में, जब भी स्वयं सहायता समूह का वित्तीय पोर्टफोलियो बेहतर हो, तो व्यवसाय को किसी भी स्तर तक बढ़ाया जा सकता है। एक बार जब आपका उत्पाद और उसका स्वाद ग्राहकों को पसंद आ जाए, तो व्यवसाय तेजी से फलने-फूलने लगेगा। हालाँकि, स्वयं सहायता समूह ने इस आय सृजन गतिविधि (IGA) में उतरने से पहले विभिन्न पहलुओं पर बहुत ध्यान से विचार किया है। इसलिए, स्वयं सहायता समूह ने अपनी निवेश क्षमता, विपणन और प्रचार रणनीति के अनुसार एक विस्तृत व्यवसाय योजना तैयार की है और विस्तृत कार्ययोजना पर नीचे चर्चा की जाएगी:

2. SHG/CIG का विवरण

3.1	SHG/CIG नाम	::	चितेरेखा जगत जननी
3.2	वीएफडीएस नाम	::	ट्रैडा
3.3	श्रेणी	::	निचार
3.4	विभाजन	::	किन्नौर
3.5	गाँव	::	ट्रैडा
3.6	अवरोध पैदा करना	::	ट्रैडा
3.7	ज़िला	::	किन्नौर
3.8	एसएचजी में सदस्यों की कुल संख्या	::	11-महिलाएं
3.9	गठन की तिथि	::	22-12-2022
3.10	बैंक खाता सं.	::	1493000100084475
3.11	बैंक विवरण	::	पीएनबी निगुलसरी
3.12	SHG/CIG मासिक बचत	::	100/- (बैठक प्रत्येक 25 को आयोजित की जाएगी) महीने का दिन
3.13	कुल बचत	::	-
3.14	कुल अंतर-ऋण	::	-
3.15	नकद क्रेडिट सीमा	::	-
3.16	पुनर्भुगतान स्थिति	::	-

3. लाभार्थियों का विवरण:

क्र.सं.	नाम(श्री/श्रीमती)	पिता/पति नाम (श्री.)	आयु	वर्ग	संपर्क नंबर	पद का नाम
1	श्रीमती कांता देवी	श्री धारा सिंह	48	अनुसूचित जनजाति	9805073450	प्रधान
2	श्रीमती नारम प्रभा	श्री राम रतन	50	अनुसूचित जनजाति	8219749044	सचिवीय
3	श्रीमती पाल्मो देवी	श्री अट्टम प्रकाश	38	अनुसूचित जनजाति	7078797840	सदस्य
4	श्रीमती पवनरेखा	श्री संजीव	32	अनुसूचित जनजाति	8629045199	सदस्य
5	श्रीमती मीरा	श्री गंगा सिंह	45	अनुसूचित जनजाति	6230031761	सदस्य
6	श्रीमती रामछोकित	श्री राज पाल	43	अनुसूचित जनजाति	8219939556	कैशियर
7	श्रीमती साइना देवी	श्री हरबंस	53	अनुसूचित जनजाति	9805756071	सदस्य
8	श्रीमती पार्वती देवी	श्री भारत	43	अनुसूचित जनजाति	8988468063	सदस्य
9	श्रीमती दिक्षु	श्री अंकुश	20	अनुसूचित जनजाति	8626986358	सदस्य
10	श्रीमती पालम देवी	श्री बाजनलाल	62	अनुसूचित जनजाति	8894504134	सदस्य
11	श्रीमती छेरिग डोल्मा	श्री अमिताभ	33	अनुसूचित जनजाति	7018207183	सदस्य

4. गाँव का भौगोलिक विवरण

1	जिला मुख्यालय से दूरी	::	66 किमी
2	मुख्य सड़क से दूरी	::	एनएच 5 से 8 किमी
3	स्थानीय बाजार का नाम एवं दूरी	::	निगुलसारी-8 किमी, नैनस्पो-7 किमी, थाच-8 किमी, रिकांगपिओ--66 किमी, जियोरी-20 किमी&रामपुर-48 किमी
4	मुख्य बाजार का नाम एवं दूरी	::	रिकांगपिओ- 66 किमी और रामपुर- 48 किमी
5	मुख्य शहरों के नाम एवं दूरी	::	66 किमी
6	उन स्थानों/स्थानों का नाम जहां उत्पाद बेचा/विपणित किया जाएगा	::	एनएच 5 से 8 किमी

5. कच्चे माल का चयन और बाजार क्षमता

विस्तृत चर्चा और विचार-विमर्श के बाद, स्वयं सहायता समूह के सदस्य इस बात पर सहमत हुए कि अचार, जैम और जूस बनाने का यह तरीका उनके लिए उपयुक्त होगा। लोग खाने के साथ तरह-तरह के अचार खाते हैं और ये स्वाद बढ़ाने का काम करते हैं। अचार का इस्तेमाल सैंडविच, हैमबर्गर, हॉटडॉग, परांठे और पुलाव आदि जैसे खाने में टॉपिंग के तौर पर भी किया जाता है।

इसी तरह, जैम और जूस भी आम हैं और नाश्ते में परोसे जाते हैं और जैम का इस्तेमाल सैंडविच में भी किया जाता है। सेब और गुलाब, जो इस क्षेत्र के स्थानीय उत्पाद हैं, का इस्तेमाल जूस बनाने में किया जाएगा और बेर, सेब के फलों का इस्तेमाल जैम बनाने में किया जाएगा। जंगली लिंगाड़ (लसुन), लहसुन, फूलगोभी (पूरी गोभी) अचार बनाने की आम सामग्री हैं। यहाँ, विशेष रूप से इस स्वयं सहायता समूह में, मुख्य रूप से स्थानीय और आसानी से उपलब्ध कच्चे माल, जैसे लहसुन, अदरक, गल-गल (पहाड़ी) पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

नींबू) लिंगाड़, आम, नींबू, मशरूम, हरी मिर्च, मछली, चिकन और मटन आदि।

अचार का बाजार कई बड़े बाजारों की उपस्थिति के कारण अत्यधिक खंडित है। और छोटा। प्रतिस्पर्धा मूल्य, गुणवत्ता, नवाचार, प्रतिष्ठा, सेवा, वितरण और प्रचार जैसे कारकों के आधार पर बाजार में शेर हिस्सेदारी को हथियाने के लिए है। अचार बनाना छोटे पैमाने पर एक आदर्श व्यवसाय है और मुख्य रूप से गृहिणियों और अन्य महिला कार्यबल के लिए है। इस मामले में यह महसूस किया गया कि जब सरकाघाट, मंडी और कांगड़ा के अचार के विक्रेता अपने अचार को कमांड क्षेत्र में बेच सकते हैं तो यह एसएचजी इसे अधिक जोरदार और तेजी से कर सकता है और ऐसे बाहरी लोगों के साथ प्रतिस्पर्धा कर सकता है।

4. अचार बनाने की व्यवसाय योजना

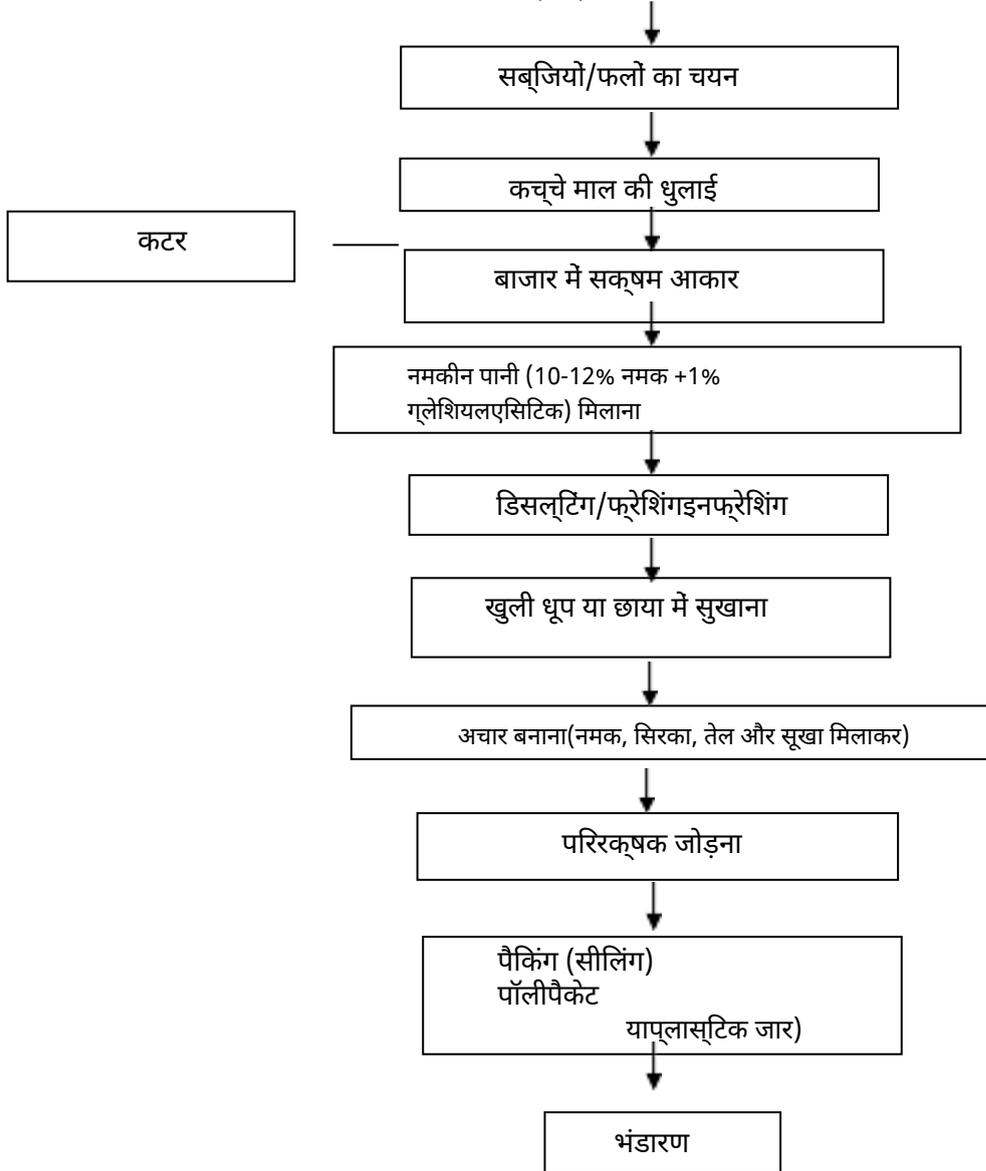
किसी भी आय सृजन गतिविधि (IGA) को शुरू करने से पहले, विस्तृत और संरचित चर्चा के साथ एक अनुकूलित व्यवसाय योजना तैयार करना बेहद ज़रूरी है। व्यवसाय योजना निवेश, परिचालन गतिविधियों, विपणन और शुद्ध आय/वापसी की स्पष्ट अवधारणा प्राप्त करने में मदद करती है। व्यवसाय को बढ़ाने की संभावनाओं को भी स्पष्ट रूप से परिकल्पित किया जाता है और इसके अतिरिक्त, यह बैंकों से वित्त की व्यवस्था करने में भी मदद करती है। व्यवसाय शुरू करने से पहले बाजार सर्वेक्षण करवाना उचित है और अच्छी बात यह है कि इस स्वयं सहायता समूह के समूह सदस्य बाजार अध्ययन से अच्छी तरह वाकिफ हैं। मुख्य रूप से स्वयं सहायता समूह ने अपने क्षेत्र में विशिष्ट प्रकार के अचार की मांग का अध्ययन किया और मुख्य रूप से स्थानीय बाजार को लक्ष्य बनाया। स्वयं सहायता समूह के सदस्यों ने आस-पास के बाजारों और स्वाद का अध्ययन करके सावधानीपूर्वक IGA को चुना है।

बड़े पैमाने पर लोगों ने इस गतिविधि को IGA के रूप में अपनाने की क्षमता देखी है।

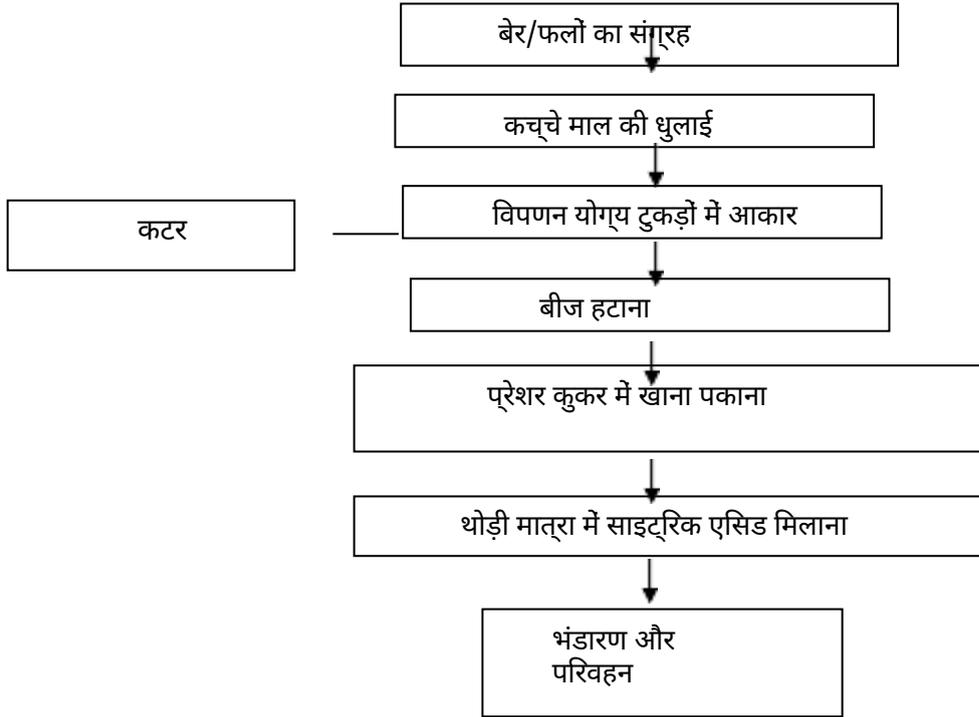
अधिकांश कच्चा माल स्थानीय रूप से उपलब्ध है और लिंगाड़ आस-पास के नम क्षेत्रों और पास के ट्रांडा जंगल के नालों में प्राकृतिक रूप से मुफ्त में उगने वाली फ़र्न प्रजातियाँ हैं। इस समूह के आसपास के छोटे कस्बों जैसे भाभानगर, आर/पियो और रामपुर भुषार के लोगों में इस लिंगाड़ के अचार के प्रति स्वाभाविक लगाव है, जो अन्यथा खुले बाजारों में उपलब्ध नहीं है।

सेब, बेर और गुलाब बागों और जंगलों में प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं और इन्हें कच्चे माल के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है, जो बिना किसी कीमत के उपलब्ध है। संग्रह के लिए केवल श्रम की आवश्यकता होती है और यह सस्ता भी होगा।

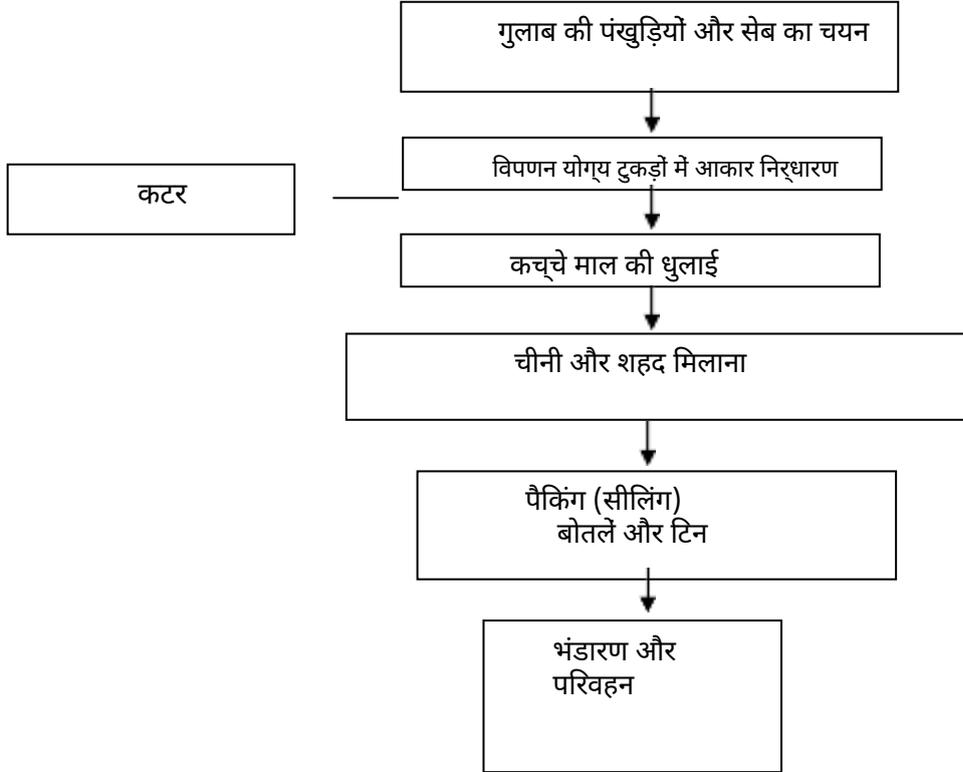
अचार चटनी बनाने का फ्लोचार्ट प्रक्रिया



जैम बनाने की प्रक्रिया का फ्लोचार्ट



जूस बनाने का फ्लोचार्ट प्रक्रिया



4. अचार/चटनी बनाने का व्यवसाय अनुपालन

अचार एक खाद्य पदार्थ है, इसलिए राज्य सरकार के विभिन्न नियमों का पालन करना आवश्यक है। चूंकि IGA को शुरुआत में छोटे पैमाने पर चलाया जा रहा है, इसलिए इन कानूनी मुद्दों का समाधान स्वयं सहायता समूह के सदस्यों द्वारा स्थानीय अधिकारियों से खाद्य प्रसंस्करण लाइसेंस प्राप्त करके स्थानीय स्तर पर ही किया जाएगा। यह व्यवसाय घर से संचालित किया जा रहा है, इसलिए स्व-नियोजित समूहों के लिए कर नियमों का ध्यान रखा जाएगा।

5. विभिन्न प्रकार के अचार

जैसा कि पिछले अध्याय में चर्चा की गई है, अचार बनाने के लिए ज्यादातर स्थानीय और आसानी से उपलब्ध कच्चे माल का इस्तेमाल किया जाएगा। अचार कई तरह के स्वाद और सुगंध वाले होते हैं, जबकि स्वयं सहायता समूह मुख्य रूप से उस क्षेत्र और बाजार में पारंपरिक और ज्यादा इस्तेमाल होने वाले अचार पर ध्यान केंद्रित करेगा जिसकी जरूरतें यह स्वयं सहायता समूह पूरी करना चाहता है। जैसे ही स्वयं सहायता समूह का कारोबार बढ़ेगा, ग्राहकों की पसंद के अनुसार माँग के अनुसार गुणवत्तापूर्ण अचार तैयार और तैयार किया जाएगा।

सबसे लोकप्रिय और आमतौर पर इस्तेमाल किए जाने वाले अचारों में से कुछ हैं आंवला, आम, बांस की टहनियाँ, मशरूम, लहसुन, अदरक, लिंगड़, मछली और चिकन आदि। कभी-कभी मिश्रित अचार जैसे लहसुन - अरबी (घिंडयाली) आम, हरी मिर्च, मिक्स वेज आदि भी लक्षित ग्राहकों के स्वाद और मांग के अनुसार तैयार किए जाते हैं।

6. स्नोट अनालिसिस

❖ ताकत-

- कुछ SHG सदस्यों द्वारा यह गतिविधि पहले ही की जा चुकी है
- कच्चा माल आसानी से उपलब्ध
- विनिर्माण प्रक्रिया सरल है
- उचित पैकिंग और परिवहन में आसान
- उत्पाद का शेल्फ जीवन लंबा है
- घर का बना, कम लागत

❖ कमजोरी-

- विनिर्माण प्रक्रिया/उत्पाद पर तापमान, आर्द्रता, नमी का प्रभाव।
- अत्यधिक श्रम-प्रधान कार्य।
- अन्य पुराने और प्रसिद्ध उत्पादों के साथ प्रतिस्पर्धा करें

❖ अवसर-

- लाभ के अच्छे अवसर हैं क्योंकि उत्पाद की लागत अन्य समान श्रेणियों के उत्पादों की तुलना में कम है
- उच्च मांग वाली दुकानें-फास्टफूड स्टॉल-खुदरा विक्रेता-थोक विक्रेता-कैटीन-रेस्तरां, शेफ्सएंडकुक्स- गृहिणियां।
- बड़े पैमाने पर उत्पादन के विस्तार के अवसर हैं।
- दैनिक/साप्ताहिक खपत और सभी मौसमों में सभी खरीदारों द्वारा उपभोग

❖ खतरे/जोखिम-

- विनिर्माण और पैकेजिंग के समय तापमान, नमी का प्रभाव, विशेष रूप से सर्दियों और बरसात के मौसम में।
- कच्चे माल की कीमत में अचानक वृद्धि
- प्रतिस्पर्धी बाजार

7. अचार/चटनी/अचार बनाने के उपकरण

उपकरण या मशीनरी की आवश्यकता मूल रूप से हमारे संचालन के तरीके और आकार पर निर्भर करती है योजना। इस मामले में एसएचजी शुरू में छोटे और प्रबंधनीय स्तर पर शुरू होगा पैमाने पर। इसलिए, रसोई में इस्तेमाल होने वाले उपकरण और सहायक उपकरण माँग को पूरा करने के लिए पर्याप्त है। इसके अलावा, योजना को व्यवहार्य बनाने के लिए कुछ मशीनरी भी खरीदनी होगी और इसलिए कुछ बुनियादी उपकरण भी खरीद में शामिल किए जाएँगे जो स्वयं सहायता समूह को अपनी गतिविधियों को बड़े स्तर पर बढ़ाने में मदद करेंगे। योजना शुरू करने के लिए शुरुआत में निम्नलिखित उपकरण खरीदे जाएँगे:

A. पूंजीगत लागत				
सीनियर नहीं	विवरण	मात्रा	यूनिट दर /मात्रा	लगभग रुपये में
1.	ग्राइंडर मशीन 1-2HP)	1	15000	15000
2.	सब्जी निर्जलीकरण यंत्र	1	27000	27000
	मिक्सर	1	4000	4000
3.	खाना पकाने की व्यवस्था (वाणिज्यिक गैस सिलेंडरविथचुल्लाह)	1	5000	5000
4.	अचार मिक्सर	1	4000	4000
	प्रेशर कुकर (10 लीटर)	1	20000	20000
	सीव(चैनिनी)	1	500	500
	प्राता (स्टील)	3	1500	4500
	कंगूरा	3	200	600
5.	तौल तराजू (2 संख्या)	2	1000	2000
	रसोईघर के उपकरण	एल/एस		1000
	मिक्सर	2	5000	10000
	तैयार उत्पादों के भंडारण के लिए अलमारी / रैक	एल/एस	8000	8000
	एपर्न, टोपी प्लास्टिक और दस्ताने आदि	एल/एस	5000	5000
6.	पैकेजिंग/सीलिंग इकाई	एल/एस	12500	12500
7.	लेबलिंग मशीन	एल/एस	12600	12600
	पट्टिला	2	5000	10000
	कार्ड बोर्ड	10	100	1000
	कटरविथसूटैड	10	600	6000
	चाकू	12	200	2400
8	फ़िज बड़ा आकार	1	40000	40000
9	सिद्धू मास्कर (मोक्तो)	1	10000	10000
10	प्रेशर कुकर (22 लीटर)	1	10000	10000
11	थर्मोस (5 लीटर)	2	75000	15000
12	जार सीलिंग मशीन	1	एल/एस	10000

	कुल			222,600
--	-----	--	--	---------

8. अचार बनाने का कच्चा माल

कच्चे माल का विवरण विभिन्न फलों, सब्जियों और अन्य वस्तुओं की आवश्यक उपलब्धता पर निर्भर करेगा। हालाँकि, मुख्य कच्चा माल फूलगोभी, लहसुन, मिर्च, लिंगुड़ा ही रहेगा। इनके अलावा, विभिन्न मसाले, नमक, खाना पकाने का तेल, सिरका आदि भी खरीदे जाएँगे। इसके अलावा, पैकेजिंग सामग्री जैसे प्लास्टिक के जार, पाउच, लेबल और कार्टन भी खरीदे जाएँगे।

बाजार की मांग के अनुसार पैकेजिंग 500 ग्राम, 1 किग्रा और 2 किग्रा कंटेनर/पाउच में की जाएगी।

इसके अलावा, स्वयं सहायता समूह एक विशाल कमरा किराए पर लेगा जिसका उपयोग संचालन गतिविधियों, अस्थायी भंडारण और गाँव में स्थित कमांड क्षेत्र के लिए किया जाएगा। किराया ₹3000 प्रति माह अनुमानित है। बिजली और पानी का शुल्क ₹1000 प्रति माह अनुमानित है। फलों और सब्जियों की औसत लागत ₹50 प्रति किलोग्राम आंकी गई है और हमारे पास उपलब्ध मानव संसाधन को ध्यान में रखते हुए, एक सप्ताह में कम से कम 200 किलोग्राम अचार का उत्पादन होगा और एक सप्ताह में यह 800 किलोग्राम होगा।

तदनुसार, 80 किलो ग्राम अचार की आवृत्ति लागत की गणना निम्नानुसार की जाती है:

बी. आवरती लागत					
एसआर एन ओ	विवरण	इकाई	मात्रा	इकाई लागत	कुल मात्रा
1.	कमरे का किराया	प्रति महीने	1	1500	3000
2.	पानी और बिजली प्रभार	प्रति महीने	1	1000	1000
4.	मसाले आदि.	किलोग्राम	100	200	20000
5.	सरसो का तेल	किलोग्राम	80	200	16000
6.	पैकेजिंग सामग्री	किलोग्राम	10	200	2000
7.	परिवहन प्रभार	महीना	एल/एस	4000	4000
8.	क्लिनिकल दस्ताने, सिर कवर और प्रोन इत्यादि।	महीना	एल/एस	4000	4000
	जार (कांच)	1किग्रा=1000	एल/एस	25	25000
	जार (कांच)	500 मिलीलीटर =100	एल/एस	25	25000
	जूस की बोतल	1 लीटर =100	एल/एस	15	1500
	कचचा माल (फूलगोभी और सामग्री ,)		एल/एस		20000
कुल आवरती लागत					121500

नोट: समूह के सदस्य स्वयं कार्य करेंगे, इसलिए श्रम लागत में वृद्धि होगी।
इसमें शामिल नहीं किया गया है और सदस्य आपस में कार्यसूची का प्रबंधन करेंगे।

9. उत्पादन लागत (मासिक)

क्रमांक।	विवरण	मात्रा
1.	कुल आवरती लागत	121500
2.	10% मूल्यह्रास (151100)	पूंजीगत लागत पर मासिक 1500
	कुल	123000

औसत मासिक आय अचार/आचार की बिक्री से होती है

सीनिबर नहीं।	विवरण	मात्रा	लागत	मात्रा
1.	अचार की बिक्री	800 किलो	200/किग्रा	160000

10. लागत-लाभ विश्लेषण (मासिक)

सीनियर नहीं।	विवरण	मात्रा
1.	कुल आवर्ती लागत	123000
2.	कुल बिक्री राशि	160000
3.	शुद्ध लाभ	37000
4.	शुद्ध लाभ का वितरण	1. कुल 160000 रुपये की बिक्री में से अनुसूचित जनजाति प्रतिमाह एक लाख रुपये आईजीए में आगे निवेश के लिए रखे जाएंगे। 2. कुल बिक्री में से शेष 60,000 रुपये एसएचजी खाते में आपातकालीन निधि के रूप में रखे जाएंगे। 1 अनुसूचित जनजाति महीना

11. स्वयं सहायता समूह में निधि प्रवाह व्यवस्था

क्रमांक। एन	विवरण	कुल राशि (₹.)	परियोजना योगदान	स्वयं सहायता समूह योगदान
1	कुल पूंजीगत लागत	222,600	1,66,950	55,650
2	कुल आवर्ती लागत	121500	0	121500
3	प्रशिक्षण	50000	50000	
	कुल परिव्यय	394100	2,16,950	1,77,150

- नोट: i) पूंजीगत लागत - 75% पूंजीगत लागत परियोजना द्वारा और 25% एसएचजी द्वारा वहन की जाएगी
 ii) आवर्ती लागत-एसएचजी द्वारा वहन की जाएगी
 iii) प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण/कौशल उन्नयन का खर्च परियोजना द्वारा वहन किया जाएगा

12. प्रशिक्षण/क्षमता निर्माण/कौशल उन्नयन

प्रशिक्षण/क्षमता निर्माण और कौशल उन्नयन की लागत पूरी तरह से परियोजना द्वारा वहन की जाएगी। इस घटक के अंतर्गत निम्नलिखित क्षेत्रों पर ध्यान देने का प्रस्ताव है:

- i) कच्चे माल की लागत प्रभावी खरीद गुणवत्ता
- ii) नियंत्रण
- iii) पैकेजिंग और विपणन प्रथाएँ
- iv) वित्तीय प्रबंधन और संसाधन जुटाना

13. आय के अन्य स्रोत

स्वयं सहायता समूह द्वारा आय के अन्य स्रोतों की भी खोज की जा सकती है, जैसे कि ग्रामीणों और आस-पास के स्थानीय लोगों के ओगला, फाफरा (बाजरा), दालें, गेहूँ, मक्का, जौ आदि को पीसना। ओगला, फाफरा और जौ को पीसकर 'सतू' तैयार किया जाएगा, जिसका स्थानीय स्तर पर उपभोग तो होगा ही, साथ ही रामपुर, रिकांगपिओ आदि के नज़दीकी बाज़ारों में भी बेचा जाएगा। इसके अलावा, अखरोट, जंगली खुबानी और बेहमी आदि भी अतिरिक्त आय के स्रोत होंगे। यह आईजीए में एक अतिरिक्त वस्तु होगी और बाद में इसे बढ़ाया जा सकता है।

14. निगरानी विधि

- वीएफडीएस की सामाजिक लेखा परीक्षा समिति आईजीए की प्रगति और निष्पादन की निगरानी करेगी तथा अनुमान के अनुसार इकाई का संचालन सुनिश्चित करने के लिए यदि आवश्यक हो तो सुधारात्मक कार्रवाई का सुझाव देगी।
- एसएचजी को प्रत्येक सदस्य के आईजीए की प्रगति और प्रदर्शन की समीक्षा भी करनी चाहिए तथा यदि आवश्यक हो तो सुधारात्मक कार्रवाई का सुझाव देना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि इकाई का संचालन अनुमान के अनुसार हो।

निगरानी क्षेत्रों के लिए कुछ प्रमुख संकेतक:

- समूह का आकार
- फंड प्रबंधन
- निवेश
- आय पीढ़ी
- उत्पाद की गुणवत्ता

15. टिप्पणी

समूहसदस्यफोटो-



छेरिंग डोल्मा



नारम प्रभा



दिक्षु



साइना देवी



पालम देवी



पार्वती देवी



मीरा



पाल्मो देवी



कांता देवी



राम चोकित

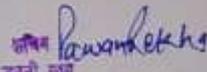


पवन रेखा

समूह का सहमती पत्र

आज दिनांक 10.04.2025 विवेका जगत जननी स्वयं सहायता समूह तराडा में मानसिक बैठक हुई यह बैठक प्रधान श्रीमती कांता देवी की अध्यक्षता में हुई। आज बैठक में सभी सदस्यों ने प्रशिक्षण के उपरांत यह निर्णय लिया कि बिजनेस प्लान रिकॉज करने के बाद से जो धन राशि दान जायका विभाग की तरफ से मिलेगी उसका उपयोग फ्रिज प्रेशर कूकर इत्यादि लेने के लिए करेंगे। जिसके लिए सभी सदस्यों ने सहमती प्रकट की है। इस बैठक में सभी सदस्यों ने भाग लिया।

प्रधान  सचिव
विवेका जगत जननी स्वयं
सहायता समूह तराडा ताराडी
समूह के प्रशासकियों के हस्ताक्षर

प्रधान  सचिव
विवेका जगत जननी स्वयं
सहायता समूह तराडा ताराडी
समूह के सचिव के हस्ताक्षर

Memorandum of Understanding

Between

The Tsando..... Village Forest Development Society/ BMC Sub Committee

And

The Forest Department (represented by DFO KINNAUR) for Participatory Forest Management.

Whereas

- The Tsando..... Village Forest Development Society/ BMC Sub-Committee (hereinafter called "Society") has been constituted as per procedure described in the HP PFM Regulations notified by Govt. of HP vide No. FFE-C (9) 1/2001 dated 23.8.2001 and vide No.FFE-B-F (5) 5/2016- Pam III dated 19.11.2018, by the Villagers of Tsando..village Forest Development Society/ BMC Sub-Committee in district KINNAUR and Forest Division KINNAUR, Himachal Pradesh and has an elected Executive Committee (hereinafter called "EC"),
- as part of the Japan International cooperation Agency (JICA) supported "Project For Improvement of Himachal Pradesh Forest Ecosystems Management and livelihoods" (hereinafter called "Project") the Micro plan (Forest Ecosystems Management Plan & Community Development & Livelihood Improvement Plan) for Forest Management and Community Development (hereinafter called "Plan") for Forest protection, rehabilitation and management of the specified forest areas has been jointly prepared by the Society and the Forest Division
- the Plan contains details of program for conservation, management and development of forest areas, Biodiversity conservation, Livelihood improvement works and also the description of equitable distribution of usufructs obtained from allocated forest areas and public resources of the ward/village;
- the Plan has been approved by the Officer in Charge of the Forest Division (here- in after called "Forest Officer") on behalf of Government of Himachal Pradesh;

Now here with

The KINNAUR..... Forest Division and the Society have mutually agreed on this MoU, and consequently. This MoU is executed with the following articles;

1. **Purpose of the Memorandum of Understanding**

~~This Memorandum of Understanding (hereinafter called "MoU") details the responsibilities of the Society regarding management and protection of forest areas) and village(s) resource development, in the manner specified in the Plan and for equitable distribution of benefits amongst its members. It further details payments and support to be provided by the project and the associated conditions.~~

- 2) Responsibilities of the Society
- 2.1 With regard to its Constitution, working, powers, duties and benefits, the Society agrees to act in accordance with the HP Government Notification No. FFE-B-F (9) 1/2001 dated 23.8.2001 and vide No.FFE-B-F (5) 5/2016- Part- III dated 19.11.2018, and other relevant Government orders and instructions.
 - 2.2 The Society agrees to provide all necessary assistance to the Forest Officer in selection of forest area(s) to be allotted to it for forest management and development so that there is no dispute regarding areas of common use of nearby villages.
 - 2.3. The Society agrees to prepare and submit general house approved, quarterly physical & financial plans with budget requirements to FTU concerned for releasing funds after Plan's approval from PMU.
 - 2.4. The Society agrees to identify Community Development Activities (CDAs) in conformity with the CDA guidelines, decide on these through a consultative process and implement them according to the relevant standards as applicable.
 - 2.5. The Society agrees to carry out works laid out in the Plan for the forest area (such as planting, fencing, maintenance and protection) and in doing so, follow the principles of management of forest and wildlife specified therein, also taking into account the guidelines of the Government, prevalent legal provisions and technical principles. The Society will ensure that no existing acts/rules of forest/wildlife management are being violated.
 - 2.6. The Society agrees to contribute membership fee through its members/user groups. The amount with interest will be available to VFDS/BMC (Sub-Committee) after project closure and can be used by VFDS/BMC (Sub-Committee) consensus. The amount deposition to be done within six months.
 - 2.7. The Society agrees, after completion of the related works, to protect the forest area from fire, illicit grazing, illicit felling, and illicit transport. Illicit mining, encroachments and poaching and shall help the forest department in this regard.
 - 2.8. The Society agrees to pass the information regarding person(s) engaged in banning the wild animals and forests or those engaged in illegal activities on to the Forest Department. The Society agrees to help forest employees in apprehending such person(s) and provide all possible assistance in protecting any seized produce etc.
 - 2.9 The Society agrees to rectify any shortcomings found during review of its works by the Forest Officer/monitoring agency.
 - 2.10 The Society agrees to keep accounts of income and expenditure of the funds from various sources and also to get regular annual audits done by the agency assigned by the Forest Officer.
 - 2.11. The Society agrees to maintain the records specified by the project regularly and in prescribed formats.
 - 2.12. The Society agrees that the distribution of products and services generated as a result of implementation of the Plan among its members/User Groups is done in an equitable manner. If the Forest Officer points out any mismanagement or irregularity in the equitable distribution of such products and services, then the

- ✓ Society agrees to implement the necessary corrections/improvements suggested by the Forest Officer.
- 2.13. Society agrees to ensure that there will be no miss utilization of funds provided by Forest Department for implementing project activities.
- 2.14. Society will open two accounts of VFDS/BMC (Sub-Committee), One for FEMP implementation (FB Account) and second one as; revolving fund under Livelihood activities (CD&LI Account).
- 2.15 The funds and maintenance of account would be in accordance with Para-36 to 43 of the Bye-laws notified by Govt. on dated 19-11-2018 for VFDS under the Project.

3. Responsibilities of the Forest Department

- 3.1. The Forest Department will provide to the Society the related input materials required to carry out the works specified in the Plan, such as saplings, fencing materials, etc. in a timely manner.
- 3.2. The Forest Department will provide the payments specified in the Plan to the Society for implementation of works carried out in the forest area on the basis of the Plan in a timely manner. The Society to prepare and submit general house approved, six monthly physical & financial plans with budget requirements to DMU through FTU concerned for release of funds. DMU to release the fund to the VFDS/BMC (Sub-Committee)
- 3.3. Funds from other department's schemes as the Panchayat may be able to garner/converge, may also be used for activities that help meet the project's objectives.
- 3.4. The Forest Department shall provide the necessary advice and guidance to the Society for implementation of works carried out in the forest area on the basis of the Plan.
- 3.5 The Forest Department shall NOT be responsible for any loss in any of the works related to implementation of the Plan and no claim of any sort can be presented against Forest Department.
- 3.6 Forest Department will take legal action against any mis appropriation of fund by VFDS/BMC (Sub-Committee).

4. Support by the Project

- 4.1. The Project will provide funds for Community Development & Livelihood activities (CDAs) identified by the Society and in conformity with the CD&LIP guidelines, which will be implemented by the Society.
- 4.2. The Project will provide to the Society if required the related input/materials required to carry out the works specified in the Plan, such as saplings, fencing materials, etc. in the required qualities and quantities.
- 4.3. The Project will provide to the Society the payments specified in the Plan for implementation of works carried out in the PFM area on the basis of the Plan.
- 4.4. The Project will provide to the Society members training and other capacity building measures, as well as support for income generating activities as specified in the Plan.

4.5. The funds earmarked for Plantations, soil and water conservation, Biodiversity conservation etc., will be credited into the VFDS/BMC (Sub-Committee) bank account according to six-month plan requirement (prepared from Micro plan) of VFDS/BMC (Sub-Committee). In addition, VFDS/BMC (Sub-Committee) to open an account for Livelihoods activity.

4.6. Payment and receipt of project funds will be strictly by means of cheques online payment/RTGS etc. or bank transfers to the account of the Society. Society will further distribute fund similarly.

5. Rights and Benefit Sharing

5.1. The Rights of right holders as admitted in the Forest Settlement will remain unaffected due to constitution of the Society and will continue to be exercised as heretofore.

5.2. The Benefits which Society members and their user groups will be entitled to after closure of plots / patches in the forest for various project interventions are as follows:

- i) to collect the yield such as fallen twigs, branches, lopping, grass, bamboos, fruits, flowers, seeds, leaf fodder and non-timber forests products free of cost through individual or collective arrangements as decided by the Society;
- ii) to the sale proceeds of all intermediate harvest, subject to protection of forest and plantations for at least 3 years from the date of agreement;
- iii) to organize and promote vocational activities related to forest produce and land; and other activities such as promotion of self-help groups which may provide direct benefits, including micro-lending to women. None of the activities so promoted shall affect the legal status of the forest land;
- iv) recorded rights over the forest shall not be affected by these benefits;
- v) after 5 years, the Society may expand the area, on the basis of a fresh agreement deed, by inclusion of adjoining or nearby areas;
- vi) to utilize at least 40 percent of the sale proceeds on forest regeneration activities including soil and water conservation.

provided that for the purpose of usufruct, the usufruct sharing family shall be one unit.

5.3. The Society will be entitled to their share of payments from intermediate and final felling,

whenever they take place in this forest, as laid out in the PFM Regulations of HP, 2001,

6. Monitoring & Evaluation

6.1. Monitoring and Evaluation of project activities will be done at different levels, including by the EC, a participatory monitoring committee and an independent third party apart from Project authorities.

6.2. The EC of VFDS/BMC (Sub-Committee) or any of its members will monitor progress and quality of work during execution of various works. The Member Secretary will record the date, places and names of EC members who checked the work(s) and whether works were satisfactory and any instructions given.

- 6.3. A participatory monitoring committee made up of members of the Society, a member from the Panchayat as well as a representative from the Forest Department (e.g. Deputy RO) will on quarterly basis review objectives, inputs and work progress and report to the whole Society. Their reports will then be sent to the Forest Officer for further action.
- 6.4. Where Society groups have carried out or are responsible for activities like social fencing, fire prevention, plantations or maintenance of plantations, annual monitoring will be carried out by Project-approved monitors (Third Party) and the results of this monitoring linked to release of payments, a) for social fencing in lieu of barbed wire fencing, b) for fire prevention as specified in the Plan and c) for survival in forest plantations as given in the agreed to norms for that activity.
- 6.5. Settlement of Disputes: Settlement of disputes and conflict resolution will be governed as laid out under para 47, 48 and 49 of the Bye Laws notified by GoHP.

Memorandum of Understanding

We are aware that the benefits mentioned in this agreement shall be available to the Society only when it discharges its duties, responsibilities and works in a satisfactory manner and this is certified by the Forest Officer every year. However, if the Forest Officer fails to fulfill conditions mentioned in Para 3 and 4 of this agreement and this is a cause for the Committee not able to discharge its responsibilities and works, and then it will be kept in mind while evaluating the works of the Committee every year.

I Urmila Devi....., President,.... V.F.S. Toand..... Joint VFDS/BMC

Sub-committee), declare on behalf of the Society, that I am committed to follow all the conditions mentioned in this MOU and am signing this memo after reading/understanding all conditions mentioned herein, literally and I understand their original meaning.

(Name and Signature of the President)

On behalf of VFDS/ BMC (Sub-committee)

[Signature]
President
VFDS Tranda
Jica Project

[Signature]
Divisional Forest Officer
Kinnaur Forest Officer
On behalf of HPFD)

Witness: Village Forest Development Society /BMC(Sub-committee) and the Forest Department for Participatory Forest Management.

1. *[Signature]*
2. *[Signature]*
3. *[Signature]*
4. *[Signature]*

1. *Mausam Shraik*, (Position) undertake, on behalf of Kinnaur Division Forest Department to implement all duties responsibilities of the Forest Department mentioned in this memorandum.

[Signature]
Range Forest Officer
Niche Range
Niche Kinnaur
Niche Range

(Name and Signature of the Divisional Forest Officer or other officer authorized by him) On behalf of Kinnaur Forest Department.

[Signature]
Kinnaur Forest Division
At R/Peo

Business Plan Approval by VFDS & DMU

Chheseekha Jagat Self help group will undertake the Achar & Chutney Pickel making
As livelihood generation activity under the project for improvement of Himachal Pradesh
Forest Ecosystems & management & livelihood (JICA Assisted). In this regard business plan
of amount (Rs.) ₹ 94100 has been submitted by this group on dated _____
and this business plan has been approved by Trenda VFDS. Business
Plan with SHG resolutions being submitted to DMU through FTU for further action, please.

Thankyou

Chheseekha Jagat
President
VFDS Trenda
Jica Project

Signature of VFDS Pradhan

Vijay
Secretary
VFDS

Signature of VFDS Secretary

V. Mehta

Signature of Forest Guard

V. Mehta

Block Forest Officer
Forest Block Trenda
Signature of Block forest officer

M. Prakash
Range Forest Officer
Nihar Forest Range
Distt. Kinnaur (H.P.)

Signature of Range Forest officer

Approved

G. Singh
DMU -cum-
Deputy conservator forests,
Kinnaur Division at R/Peo

Resolution –cum-group consensus form

It is decided in the general house meeting of the Self Help Group, Chiterukha, Janda Held on at Janda that our self help group will undertake the Pokhar Chaitanyo Development as livelihood income generation activity under the project for improvement of Himachal Pradesh.

Forest Ecosystem Management & Livelihoods. (JICA Assisted.)

प्रधान Pooni साक्षर
शिक्षण जगत जननी स्वयं
सहायता समूह तारागढ़ा तटसील
निचान, जिला किन्नौर हि० प्र०

Signature of Group Pradhan

प्रधान Chiterukha
निचान, जिला किन्नौर हि० प्र०

Signature of Group Secretary